OCHORUS ORIGINALS

1

परमेश्वर के लिये साहसी

छह जन जो यीशु के पीछे विस्तृत संसार में गए



Ochorus

परमेश्वर के लिये साहसी

छह जन जो यीशु के पीछे विस्तृत संसार में गए

Ochorus Originals

OCHORUS

Ochorus के बारे में

मसीही विश्वास की महान क्लासिक कृतियों को दुनिया भर के चर्च के लिए मुफ़्त उपलब्ध कराना — उनकी अपनी भाषा में, परमेश्वर की महिमा के लिए।

Ochorus एक मसीही सेवकाई है, जिसके केंद्र विक्टोरिया (कनाडा) और कम्पाला (युगांडा) में हैं। 2021 से हम अतीत की महान मसीही पुस्तकें खोजते हैं, आज के पाठकों के लिए उनका सावधानी से संपादन करते हैं, और उन्हें मुफ़्त देते हैं — पढ़ने के लिए भी मुफ़्त और रखने के लिए भी मुफ़्त।

हम केवल एक वेबसाइट नहीं हैं। युगांडा में छपी पुस्तकें पूरे पूर्वी अफ़्रीका में सीधे लोगों के हाथों में पहुँचाई जाती हैं — पास्टरों के सम्मेलनों में, और उन कलीसियाओं, विद्यालयों और जेलों में जहाँ हमें सेवा के लिए बुलाया जाता है।

ochorus.com पर पढ़ना जारी रखें

- सैकड़ों क्लासिक पुस्तकें, उपदेश और जीवनियाँ — निःशुल्क, बिना विज्ञापन और बिना खाते के।
- अनेक भाषाओं में पुस्तकें — अंग्रेज़ी और स्वाहिली से लेकर अरबी और हिंदी तक।
- पढ़ने की योजनाएँ, हाइलाइट और नोट्स जो एक डिवाइस से दूसरे डिवाइस तक आपके साथ चलते हैं।
- ऊँची आवाज़ में सुनें, या किसी पुस्तक को ऑफ़लाइन पढ़ने के लिए सहेज लें।
- इस जैसी निःशुल्क डाउनलोड। इन्हें खुलकर बाँटें।

"तुम ने सेंत मेंत पाया है, सेंत मेंत दो।"

मत्ती 10:8

विषय-सूची

सैमुएल क्राउथर: दास-जहाज़ का बालक — 5

मैरी स्लेसर: वह लड़की जो किसी से नहीं डरती थी — 7

हडसन टेलर: वह आदमी जो अजनबी नहीं बनना चाहता था — 9

जॉर्ज म्यूलर: वह मनुष्य जिसने नाश्ते के लिये प्रार्थना की — 11

ग्लैडिस एल्वर्ड: वह दासी जिसने सौ बच्चों की अगुवाई की — 13

एमी कारमाइकल: बचाए गए बच्चों की माँ — 15

सैमुएल क्राउथर: दास-जहाज़ का बालक

जब सैमुएल क्राउथर अफ़्रीका में एक छोटा बालक था, तब उसे सैमुएल बिलकुल नहीं कहा जाता था। उसका नाम अजायी था, और वह ओसोगुन नाम के एक नगर में रहता था, जो योरूबा लोगों के देश में था — वही देश जिसे अब नाइजीरिया कहते हैं। उसकी एक माँ थी, और भाई-बहन थे, और एक घर था जिससे वह बहुत प्यार करता था।

एक भयानक सुबह, जब वह लगभग बारह वर्ष का था, लुटेरे नगर पर टूट पड़े। उन्होंने घरों में आग लगा दी और लोगों को रस्सियों में बाँधकर घसीट ले गए, ताकि उन्हें दासों के रूप में बेच सकें। अजायी को उसकी माँ से छीन लिया गया। उसे एक बार बेचा गया, फिर दोबारा, और फिर से, यहाँ तक कि आख़िरकार उसे समुद्र पार जाने वाले एक भरे हुए जहाज़ पर धकेल दिया गया। जहाज़ के तल में अँधेरा और गरमी थी, और वह डरे हुए लोगों से भरा हुआ था। उसे नहीं लगता था कि वह अपना घर, या आसमान, फिर कभी देख पाएगा।

परन्तु परमेश्वर उस अँधेरे में पड़े बालक को नहीं भूला था। समुद्र पर, एक ब्रिटिश जहाज़ उनके पीछे चला आ रहा था। उसके नाविक दासों को ले जाने वाले जहाज़ों को खोजते थे और बंदियों को छुड़ाते थे। उन्होंने अजायी के जहाज़ को पकड़ लिया, बेड़ियाँ तोड़ डालीं, और छुड़ाए गए लोगों को फ़्रीटाउन नाम के एक नगर में ले गए, जो सिएरा लियोन में है, जहाँ वे एक नया जीवन आरम्भ कर सकते थे।

फ़्रीटाउन में अजायी ने कुछ ऐसा किया जिसकी उसे पहले कभी अनुमति नहीं मिली थी: वह स्कूल गया। वह एक अद्भुत विद्यार्थी निकला। जैसे सूखी ज़मीन वर्षा को सोख लेती है, वैसे ही उसने पढ़ना और लिखना सीख लिया। जब उसने मसीही विश्वासी के रूप में बपतिस्मा लिया, तब उसने एक नया नाम अपनाया — सैमुएल क्राउथर — परन्तु वह न तो अजायी को भूला, न अपने लोगों को, और न ही उस बोली को जो वे बोलते थे।

यही आख़िरी बात उसके जीवन का सबसे बड़ा काम बन गई। सैमुएल ने यीशु का सुसमाचार अंग्रेज़ी में सुना था। परन्तु उसके अपने लोग, योरूबा, अंग्रेज़ी नहीं पढ़ सकते थे।

इसलिए सैमुएल बैठ गया और उसने बाइबल को योरूबा भाषा में उतारने का लम्बा और धैर्य भरा काम आरम्भ किया, एक-एक शब्द करके, ताकि उसकी मातृभूमि की माताएँ, बच्चे और बूढ़े लोग उसे स्वयं पढ़ सकें। उसने योरूबा भाषा को सबसे पहली बार लिखित रूप देने में मदद की।

सैमुएल बड़ा होकर एक सेवक बना, और फिर, सन् 1864 में, कुछ ऐसा हुआ जो पहले कभी नहीं हुआ था: उसे बिशप बनाया गया — उसकी कलीसिया में पहला अफ़्रीकी बिशप। जो बालक कभी ज़ंजीरों में बेचा गया था, वही अब दूसरों को यीशु के पीछे चलने में अगुवाई करने लगा, और उसने यह एक अफ़्रीकी के रूप में किया, अपने लोगों पर गर्व करते हुए।

सैमुएल क्राउथर उन सब बातों के कारण, जो उसके साथ की गई थीं, कड़वाहट से भरकर बड़ा हो सकता था। परन्तु इसके बजाय उसने अपना पूरा जीवन अपने लोगों को वही सबसे बड़ा उपहार देने में लगा दिया जो उसे मिला था: परमेश्वर के वचन, अपने घर की भाषा में।

मैरी स्लेसर: वह लड़की जो किसी से नहीं डरती थी

मैरी स्लेसर स्कॉटलैंड के धुँधले शहर डंडी में गरीबी में पली-बढ़ी। उसके परिवार के पास इतने कम पैसे थे कि मैरी को केवल ग्यारह साल की उम्र में ही जूट की एक मिल में काम करने जाना पड़ा। वह सुबह-सुबह से ही उन बड़ी-बड़ी खड़खड़ाती मशीनों को सँभालती, और दिन के केवल आधे समय के लिए स्कूल जाती थी। उसके बाल लाल थे, आँखें चमकीली नीली थीं, और उसका स्वभाव ऐसा गुस्सैल था जिसे काबू में रखना उसे सीखना पड़ा।

मिल में किसी ने मैरी को डेविड लिविंगस्टन नाम के एक मिशनरी की कहानियाँ दीं, जिसने पूरे अफ्रीका की यात्रा की थी। मैरी उन्हें बार-बार पढ़ती रही, यहाँ तक कि वह उन नदियों और जंगलों को मानो अपनी आँखों से देखने लगी। उसने ठान लिया: एक दिन वह भी वहाँ जाएगी।

और उसने ऐसा किया भी। जब वह बड़ी हुई, तो मैरी जहाज़ से कालाबार गई—जो अब नाइजीरिया में है—ताकि लोगों को यीशु के बारे में बता सके। पर मैरी लोगों से अलग किसी आरामदेह घर में नहीं रहना चाहती थी। वह उन्हीं के बीच रहना चाहती थी। उसने उनकी भाषा, एफिक, सीखी, यहाँ तक कि वह उसमें हँस सकती, बहस कर सकती और प्रार्थना कर सकती थी। वह उनका खाना खाती, उनके गाँवों में सोती, और नंगे पैर जंगल में चलती थी। लोग उसे अब कोई अजनबी नहीं समझते थे। वे उसे “मा” कहकर बुलाते थे।

उस जगह एक क्रूर और डरावना रिवाज़ था। जब जुड़वाँ बच्चे जन्म लेते, तो लोग मानते थे कि वे बच्चे शापित हैं और उनमें से एक ज़रूर किसी दुष्ट आत्मा का बच्चा है। इसलिए जुड़वाँ बच्चों को जंगल में ले जाकर मरने के लिए छोड़ दिया जाता, और उनकी माँ को गाँव से निकाल दिया जाता था।

मैरी जानती थी कि यह एक झूठ है, और बहुत ही बुरा झूठ। इसलिए जब भी उसे जुड़वाँ बच्चों की खबर मिलती, वह दौड़ पड़ती—जंगल में, अँधेरे में, गुस्साई भीड़ के बीच—और उन बच्चों को गोद में उठाकर अपने घर ले आती। उसने उनमें से कई को अपने ही बच्चों की तरह

पाला। धीरे-धीरे, केवल इसलिए कि एक छोटी-सी लाल बालों वाली स्त्री डरने को तैयार नहीं थी, जुड़वाँ बच्चों को मारना बंद होने लगा।

मुखिया उस पर इतना भरोसा करने लगे कि वे अपने झगड़े सुलझाने के लिए उसी के पास आते थे। जो स्त्री कभी इतनी गरीब थी कि अपनी पढ़ाई तक पूरी न कर सकी, वही अब पूरे-पूरे गाँवों के बीच शांति की न्यायी बनकर बैठती थी।

लोग कहते थे कि मैरी स्लेसर किसी से नहीं डरती। पर यह पूरी तरह सच नहीं था। मैरी अक्सर डरती थी। लेकिन उसने बहुत पहले ही तय कर लिया था कि डरते हुए भी जाना उसे भला लगता है, बजाय इसके कि सुरक्षित रहकर घर बैठी रहे—क्योंकि उसका विश्वास था कि परमेश्वर उसके साथ चल रहा है।

हडसन टेलर: वह आदमी जो अजनबी नहीं बनना चाहता था

हडसन टेलर इंग्लैंड का एक नौजवान था, जिसकी बड़ी लालसा थी कि वह चीन के लोगों को यीशु के बारे में बताए। उसके ज़माने में चीन दुनिया का सबसे बड़ा देश था, और उसके अधिकतर लोगों ने सुसमाचार एक बार भी नहीं सुना था।

जब हडसन वहाँ पहुँचा, तो उसने एक बात देखी जिसने उसका मन बेचैन कर दिया। वहाँ के प्रचारक अंग्रेज़ी कपड़े पहनते थे, अंग्रेज़ी घरों में रहते थे, और अंग्रेज़ी खाना खाते थे। चीन के लोगों की नज़र में वे परदेसी अजनबी दिखते थे, और किसी अजनबी पर भरोसा करना या उसकी बात मानना कठिन था।

इसलिए हडसन ने कुछ ऐसा किया जिसे देखकर बाकी प्रचारक हैरान रह गए। उसने अपना अंग्रेज़ी सूट उतार दिया। उसने वही कपड़े पहने जो चीन के लोग पहनते थे। उसने पीछे अपने बाल लंबे बढ़ाकर चोटी गूँथ ली, जैसे उन दिनों चीनी पुरुष रखते थे। उसके अपने कुछ दोस्तों ने उसका मज़ाक उड़ाया और कहा कि उसने हद पार कर दी है। पर अब, जब हडसन किसी कस्बे से गुज़रता, तो लोग उसमें कोई परदेसी नहीं देखते थे। वे एक ऐसे आदमी को देखते थे जो उनके पास आ गया था, जो उनके जैसा बन गया था, ताकि वे उसकी बात सुनें।

हडसन सिर्फ़ चीन के किनारे के इलाकों तक नहीं, बल्कि उस विशाल भीतरी हिस्से तक पहुँचना चाहता था, जहाँ आज तक कोई प्रचारक नहीं गया था। इसके लिए उसे बहुत से काम करनेवालों और ढेर सारे पैसों की ज़रूरत थी — और उसके पास लगभग कुछ भी नहीं था। इसलिए हडसन ने एक शांत और साहसी निर्णय लिया। वह किसी भी इंसान से पैसा कभी नहीं माँगेगा। वह केवल परमेश्वर से, प्रार्थना में माँगेगा, और भरोसा रखेगा कि परमेश्वर जो ज़रूरी है, वह भेज देगा।

यह जीने का एक डरावना तरीका था। कई बार ऐसा हुआ कि अलमारी में थोड़ा-सा भोजन था और जेब में कुछ भी नहीं। पर बार-बार पैसा आ जाता था — कभी-कभी ठीक

उसी घड़ी में जब उसकी ज़रूरत होती, ऐसे लोगों की ओर से जिन्हें पता ही नहीं था कि ज़रूरत कितनी बड़ी है।

हडसन टेलर ने एक ऐसा मिशन शुरू किया जिसने सैकड़ों काम करनेवालों को चीन के भीतर दूर-दूर तक भेजा, ऐसी जगहों तक जो यीशु का नाम सुनने के लिए सैकड़ों सालों से बाट जोह रही थीं। उसने पचास साल से भी ज़्यादा इस काम में लगाए, और वह उस देश या उसके लोगों से कभी नहीं थका।

हडसन ने एक ऐसी बात सीख ली थी जिसे वह कभी न भूला: लोगों तक पहुँचने के लिए, पहले तुम्हें उनके पास आना होता है। वह दूर खड़े होकर चिल्लाना नहीं चाहता था। वह पास आना चाहता था, दोस्त बनना चाहता था, और अजनबी नहीं बनना चाहता था।

जॉर्ज म्यूलर: वह मनुष्य जिसने नाश्ते के लिये प्रार्थना की

जब जॉर्ज म्यूलर जर्मनी में एक छोटा बालक था, तब वह बिलकुल भी अच्छा न था। वह झूठ बोलता था, और चोरी करता था — यहाँ तक कि अपने ही पिता से भी — और सोलह वर्ष का होने से पहले ही वह बन्दीगृह में जा पहुँचा। ऐसा लगता था मानो पूरी पृथ्वी पर वही सबसे अन्तिम व्यक्ति हो जो कभी विश्वास का वीर बन सके।

परन्तु जॉर्ज की भेंट यीशु से हुई, और सब कुछ बदल गया। वह इंग्लैंड के ब्रिस्टल नगर में जा बसा, और वहाँ उसने एक ऐसी बात देखी जिससे उसका हृदय टूट गया: ऐसे बच्चे जिनके न माता थीं न पिता, जो सड़कों पर सोते थे, भूखे और अकेले। जॉर्ज ने ठान लिया कि वह उनके लिये एक घर बनाएगा।

फिर उसने एक और भी अचम्भे की बात ठानी। वह उस घर को इस रीति से चलाएगा कि सब लोगों को दिखाई दे कि परमेश्वर कितना सच्चा है। वह किसी एक भी व्यक्ति से कभी पैसा न माँगेगा। वह न तो माँगनेवाली चिट्ठियाँ भेजेगा, और न ही यह संकेत देगा कि उसके पास कमी है। वह केवल परमेश्वर ही को अपनी आवश्यकता बताएगा, और प्रतीक्षा करता रहेगा।

एक प्रसिद्ध सवेरे, बच्चे लम्बी मेज़ों पर बैठ गए, और उनके सामने उनकी थालियाँ और प्याले रखे थे — परन्तु घर में तो कुछ भी खाने को न था, और न ही कुछ खरीदने के लिये पैसा। जॉर्ज खड़ा हुआ और जो नाश्ता वे खाने ही वाले थे उसके लिये उसने परमेश्वर का धन्यवाद किया, यद्यपि वहाँ खाने को कुछ भी न था।

ज्यों ही उसने प्रार्थना समाप्त की, त्यों ही द्वार पर खटखटाहट हुई। बाहर एक रोटी बनानेवाला खड़ा था। उसने कहा कि रात को उसे नींद नहीं आई, और उसे ऐसा लगा कि उसे उठकर बच्चों के लिये रोटी सेंकनी चाहिए, और देखो, यह रही — अब भी गरम। फिर से खटखटाहट हुई। यह दूधवाला था: उसकी गाड़ी ठीक बाहर ही टूट गई थी, और वह नहीं

चाहता था कि दूध खराब हो जाए — क्या बच्चे इसे लेना चाहेंगे? आखिरकार उस सवेरे बच्चों ने नाश्ता कर ही लिया।

ऐसी बातें केवल एक ही बार नहीं हुईं। अपने लम्बे जीवन में जॉर्ज म्यूलर ने दस हज़ार से भी अधिक अनाथों की देखभाल की, और उन्हें गरम रखने, खिलाने और सिखाने के लिये बड़े-बड़े घर बनाए। और इन सब में उसने परमेश्वर के सिवा किसी और से कुछ न माँगा।

जॉर्ज म्यूलर चाहता था कि सारा संसार एक सरल बात देखे: कि परमेश्वर सुनता है, और परमेश्वर देता है। उसने इसे चतुराई भरे शब्दों से नहीं, परन्तु दस हज़ार बच्चों के द्वारा प्रमाणित किया, जो हर रात पेट भरकर सोने जाते थे, क्योंकि जर्मनी के एक बुरे बालक ने प्रार्थना करना सीख लिया था।

ग्लैडिस एल्वर्ड: वह दासी जिसने सौ बच्चों की अगुवाई की

ग्लैडिस एल्वर्ड लंदन की एक छोटे कद की स्त्री थी, जो दासी का काम करती थी और दूसरों के घर साफ़ किया करती थी। उसे पक्का विश्वास था कि परमेश्वर उसे चीन भेजना चाहते हैं। पर जब उसने एक मिशन संस्था से कहा कि वे उसे भेजें, तो उन्होंने उसकी परीक्षा ली और उसे मना कर दिया — उन्होंने कहा कि वह इतनी होशियार नहीं, और भाषा सीखने के लिये बहुत बड़ी हो चुकी है।

ग्लैडिस ने हार नहीं मानी। उसने पाई-पाई करके अपनी मज़दूरी बचाई, जब तक उसके पास सफ़र का सबसे सस्ता, सबसे लंबा और सबसे ख़तरनाक रास्ता तय करने भर के पैसे न हो गए — रेलगाड़ी से पूरे यूरोप और एशिया को पार करते हुए। वह पहाड़ों में ऊँचाई पर बसे यांगचेंग नाम के एक नगर में पहुँची, जहाँ उसके पास अपनी बाइबल और अपनी दृढ़ता के सिवा कुछ भी न था।

और वहाँ के लोग उससे प्रेम करने लगे। आख़िरकार उसने भाषा सीख ही ली। उसने एक सराय खोली, जहाँ यात्री विश्राम कर सकते और यीशु की कहानियाँ सुन सकते थे। वह तो एक अधिकारी भी बन गई, जिसका काम गाँव-गाँव घूमना था; और जहाँ-जहाँ वह जाती, वहाँ उन बच्चों को इकट्ठा कर लेती जिनकी देखभाल करनेवाला कोई न था — यहाँ तक कि उसका सारा घर बच्चों से भर गया।

फिर युद्ध आ पहुँचा। सैनिकों ने उस देश पर चढ़ाई की, और वहाँ रहना अब सुरक्षित न रहा। ग्लैडिस की देखभाल में लगभग सौ बच्चे थे, और उनकी रक्षा के लिये कोई सेना न थी — केवल वह अकेली। इसलिये उसने वही किया जो वह कर सकती थी। उसने बच्चों को इकट्ठा किया और पैदल ही निकल पड़ी, पहाड़ों के पार, ताकि उन्हें दूर दूसरी ओर सुरक्षित पहुँचा दे।

इसमें लगभग दो सप्ताह लगे। उन्होंने खड़ी चढ़ाइयाँ चढ़ीं और एक चौड़ी, तेज़ बहती नदी पार की। खाने को थोड़ा ही था, और छोटे बच्चे थक जाते थे; ग्लैडिस सबसे छोटे को गोद

में उठा लेती और उन्हें चलाते रहने के लिये गीत गाती। जब वे डर जाते, तो वह उन्हें उस परमेश्वर की याद दिलाती जो बहुत पहले अपने लोगों को समुद्र के बीच से सकुशल पार ले आया था।

एक-एक बच्चा जीवित पहाड़ों के पार आ पहुँचा।

होशियार लोगों ने ग्लैडिस एल्वर्ड से कहा था कि वह काफ़ी नहीं है। पर परमेश्वर ने उसी दासी को लिया जिसे उन्होंने ठुकरा दिया था, और उसे इतना बलवन्त बना दिया कि वह सौ बच्चों को युद्ध के बीच से पार ले गई।

एमी कारमाइकल: बचाए गए बच्चों की माँ

एमी कारमाइकल का जन्म आयरलैंड में हुआ था, और उसकी आँखें भूरी थीं, जो उसे पसंद नहीं थीं। जब वह एक छोटी बच्ची थी, तब उसने प्रार्थना की कि परमेश्वर उसकी आँखों को नीला कर दे, और सुबह वह दौड़कर आईने के पास गई — पर वे अब भी भूरी ही थीं। तब वह उदास हो गई। बहुत साल बाद उसे समझ आया: परमेश्वर के पास उन भूरी आँखों के लिए एक कारण था, और वह उन्हें काम में लाने वाला था।

एमी बड़ी हुई और बहुत दूर चली गई, दक्षिण भारत में, ताकि लोगों को यीशु के बारे में बताए। वहाँ उसे एक ऐसा भेद पता चला जिसने उसे भय से भर दिया। छोटे-छोटे बच्चों को, जिनमें से कुछ तो केवल शिशु ही थे, उनके परिवारों से छीनकर मंदिरों में रहने के लिए दे दिया जाता था, जहाँ उनके साथ भयानक काम किए जाते थे, और जहाँ से उन्हें कभी निकलने नहीं दिया जाता था।

एमी यह देखकर आगे नहीं बढ़ सकती थी। उसने बहुत चुपके से और बड़ी हिम्मत के साथ बच्चों को बचाना शुरू किया। कभी-कभी कोई डरा हुआ बच्चा रात में छिपाकर उसके पास पहुँचाया जाता था। कभी-कभी एमी खुद ऐसी जगहों में चली जाती थी जहाँ उसे जाना मना था। भीड़ में से बिना पकड़े गुज़रने के लिए, वह एक साधारण भारतीय साड़ी पहनती और अपनी गोरी त्वचा को कॉफ़ी से गहरा रंग लेती — और अब उसकी वही भूरी आँखें, जिन्हें बचपन में उसने बदल जाने की चाह की थी, उसे सबके बीच घुलमिल जाने और अनदेखा रह जाने में मदद करती थीं। परमेश्वर को पहले से पता था।

एक-एक करके, फिर दर्जनों-दर्जनों की संख्या में, बचाए गए ये बच्चे एमी के साथ डोहनावूर नाम की एक जगह में रहने आ गए। उसने उसे एक सच्चा घर बना दिया, जो बगीचों, गीतों और सुरक्षा से भरा था, जहाँ वह बच्चा जो केवल डर को जानता था, हँसना सीख सकता था। बच्चे उसे "मिस" या "मैडम" नहीं कहते थे। वे उसे *अम्मा* कहते थे — जिसका अर्थ है "माँ।"

एमी ने कभी विवाह नहीं किया और कभी वापस आयरलैंड नहीं गई। उसने अपना पूरा जीवन डोहनावूर के बचाए गए बच्चों को दे दिया। जीवन के अंत के पास, एक बार गिर जाने के बाद, उसने बीस साल अपने कमरे से बाहर न निकल पाते हुए बिताए — और तब भी वह लिखती रही, और सारी दुनिया के लोगों को सांत्वना देने और मज़बूत करने के लिए अपने शब्द भेजती रही।

एमी कारमाइकल ने कभी अलग आँखें और एक आसान जीवन चाहा था। पर इसके बजाय वह उन बच्चों की माँ बन गई जिन्हें और कोई बचाना नहीं चाहता था — और वह उन्हें किसी भी चीज़ के बदले न देती।

यह AI द्वारा किया गया अनुवाद है, जिसकी किसी मूल भाषी द्वारा समीक्षा होना अभी बाकी है। यह लेखक का मूल पाठ नहीं है।

© Ochorus. युवा पाठकों के लिए लिखी गई Ochorus की मौलिक कृति। इसे निःशुल्क पढ़ें और साझा करें।

यह अनुवाद Ochorus ने तैयार किया है, जो मसीही क्लासिक पुस्तकों का एक निःशुल्क पुस्तकालय है।

Scripture quotations are from the Indian Revised Version (IRV), © 2017–2019 Bridge Connectivity Solutions, licensed under CC BY-SA 4.0 (https://creativecommons.org/licenses/by-sa/4.0/).

इसे ऑनलाइन, निःशुल्क पढ़ें: https://ochorus.com/hi/books/brave-for-god/

और निःशुल्क क्लासिक पुस्तकें: ochorus.com